दोनों तरफ से

लेखिका: एलेन वीसबर्ग

विषयसूची

भाग: 1, 2, 3, 4

भाग 1

मुझसे कई बार यह सवाल किया गया है कि क्या मुझे या डॉक्टरों को पता था कि मुझे कैंसर कैसे हुआ, मानो जैसे यह कोई ऐसी चीज हो जिससे मैं ज्यादा सावधानी रखकर बच सकती थी। मैं जानती हूँ यह सवाल क्यों और कहाँ से आता था: लोग दूसरों को ऐसी तक़दीर का शिकार होते हुए देखकर डर जाते हैं, जिसके वो खुद कभी शिकार हो सकते हैं।

मैं इस बात को पूरी तरह समझती हूँ कि लोगों को इसके जवाब में कुछ ऐसा सुनना ज्यादा अच्छा लगेगा कि: "मैं हर दिन लेबोरेटरी में कार्सिनोजेन्स और टेराटोजेन्स और दूसरी विषैली चीजों के साथ काम करती थी।" या: "मेरी डाइट बहुत खराब थी।" या "मैं अक्सर विषैले कूड़े फेंकने वाली जगहों पर घूमने जाती थी।" या: "इसे मैं अमेज़न पर देखा था और ये मुझे चाहिए था इसलिए मैंने प्रोमो कोड से इसे खास तौर पर ऑर्डर किया था।"

मुझे लगता है लोग यह मानना चाहते थे कि इस बीमारी के पीछे कोई ऐसी चीज थी, जिसे जाने-अनजाने मैंने खुद चुना था। तो, इस बेकार की जिज्ञासा के स्रोत को समझने के बाद, मैं खुद को उन्हें बुरा-भला सुनाने या अपना बचाव करने की इच्छा को दबाकर बस इतना कहती थी कि "मुझे लगता है कैंसर अलग-अलग लोगों को अलग-अलग कारणों से होता है।"

मेरा मानना है कि कुछ लोगों को यह ज्यादातर आनुवंशिक कारणों से होता है। मुझे आर्ची कॉमिक्स के जगहेड या स्कूबी डू के शैगी के चरित्रों का उदाहरण देना अच्छा लगता था, जो शायद फैट अल्बर्ट जितना ही खाते थे, लेकिन उनके मेटाबॉलिज़्म में अंतर के कारण वो दोनों मोटा होने से बच जाते थे। हम सभी को विरासत में अच्छी और बुरी चीजें मिलती हैं, जो बताती हैं कि समय के साथ हमारी कोशिकाएं कैसा व्यवहार करने वाली हैं, और कुछ मामलों में बस यही कारण होता है, और फिर चाहे आप बबल बॉय वाले किसी इंसान की तरह अपनी ज़िन्दगी बिता सकते हैं, लेकिन फिर भी आपको कैंसर हो जायेगा, क्योंकि आपके अंदर भी वही खराब जीन है जिसकी वजह से आपकी किसी आंटी को लिंफोमा हुआ था।

शायद कुछ लोगों में, समय के साथ बूढ़ी होती हुई कोशिकाएं खराब डीएनए रिपेयर सिस्टम की वजह से खुद को ठीक नहीं पर पातीं, जबकि किसी स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में ये लगातार विभाजित होती हैं और गलतियां करती हैं, लेकिन फिर ठीक हो जाती हैं। या फिर, समय के साथ, किसी व्यक्ति की प्रतिरक्षा क्षमता उतनी अच्छी तरह से बीमारियों को दूर नहीं कर पाती, जितनी अच्छी तरह पहले करती था।

शायद यह ज्यादातर पर्यावरण के "हमलों" के एकजुट होने की वजह से होता है, जिनमें से हर एक अपने आप में ही कोई बीमारी विकसित करने की संभावना में बढ़ोतरी करता है और, एक साथ मिलकर, वो हमारे जीवन में एक बड़ी विपत्ति ला सकते हैं, जिससे बचने की कोई संभावना नहीं होती। प्रसिद्ध शोधकर्ता बर्ट वोगेलस्टीन ने कैंसर के बारे अपने एक पेपर में बताया था कि यह अनियमित म्यूटेशन के परिणामस्वरूप होता है: जो बस बुरी किस्मत है।

अपने मामले में मुझे बस इतना पता है कि मेरी माँ ने भी उसी तरह के हॉर्मोन-रेस्पॉन्सिव कैंसर के ज्यादा बड़े रूप का सामना किया था जो मुझे हुआ था, अंतर बस इतना था कि उन्हें जब इसके बारे में पता चला तब वो मुझसे लगभग 15 साल बड़ी थीं। मुझे अपने चचेरे भाई-बहनों से यह भी पता चला कि मेरे पिता की तरफ का परिवार भी कैंसर का सामना कर चुका है। और इसलिए मैं इस संभावना से इंकार नहीं कर सकती कि मेरे अंदर ऐसी कोई वंशानुगत चीज मौजूद थी जो मुझे इसके प्रति ज्यादा संवेदनशील बनाती थी।

मैंने कई बार यह भी सुना है कि तनाव की वजह से भी शरीर पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है और मैं बेफिक्र लोगों में से नहीं थी, जो किसी चीज का तनाव लिए बिना आराम से अपनी ज़िन्दगी चलने देते हैं। इन सभी चीजों को ध्यान में रखते हुए, मेरे मामले में ऐसी कोई भी चीज वो कारण हो सकती थी जिसकी वजह से मुझे कैंसर झेलना पड़ा। मैं अपने शरीर में क्या ले रही थी और मैं अपने शरीर के साथ क्या कर रही थी इन चीजों के बारे जानकारी रखने के अलावा, मुझे इसके बारे में कुछ पता नहीं था कि मैं किस तरह खुद को बीमार होने से रोक सकती थी।

पिछला साल भावनात्मक रूप से मेरे लिए बहुत मुश्किल था। इसने मुझे एहसास दिलाया कि जैसे-जैसे दिन गुजर रहे थे समय कम होता जा रहा था। मैं पहले से भी कहीं ज्यादा, इन चीजों के बारे में सोचने लगी थी कि मैं अपना समय कैसे और किसके साथ गुजार रही हूँ। क्योंकि पिछले साल, मैं ल्यूकेमिया के शोध और अध्ययन से दूर हो गयी थी, जो मैं बहुत अच्छे से करती आयी थी और, अब मैं उसी कैंसर अस्पताल में किसी और का प्रयोग बन गयी थी। पिछले एक साल में, मेरी ज़िन्दगी इस तरह से बदली जैसे मैंने कभी उम्मीद भी नहीं की थी, और मुझे पता है कि ये वापस पहले जैसी कभी नहीं होगी।

* * *

मुझे याद है पहली बार मैंने यह बदलाव तब महसूस किया था जब मैंने बार-बार अपनी दर्दभरी यादें दूसरों के साथ बांटने वाले वियतनाम की लड़ाई के किसी सैनिक की तरह खुद को हर बार लोगों से अपनी कैंसर की कहानी बताते हुए पाया। यह कुछ ऐसे होता था, मैं अपने पति के साथ बिस्तर पर लेटकर टेलीविज़न देख रही थी, उस घटना से पहले सैकड़ों बार मैंने ऐसे समय बिताया था, लेकिन मैंने कभी उन्हें अहमियत नहीं दी।

मेरी लम्बी आस्तीन वाली शर्ट ऊपर चढ़ गयी थी, जिसे मैंने अपने पजामे के ऊपर पहन रखा था और, इसे ठीक करने के लिए मेरा हाथ मेरे शरीर के किनारे चला गया। यही वो समय था जब मुझे एहसास हुआ कि

कुछ सही नहीं था, कुछ ठीक नहीं लग रहा था। अपने स्तन के दायीं तरफ बिल्कुल किनारे मुझे एक सूजन महसूस हुई।

रूको, मैंने सोचा। ये मेरा ब्रा होगा।

रूको, मैंने दोबारा सोचा। मैंने ब्रा नहीं पहनी है। असल में, मेरे पास ब्रा है ही नहीं।

मेरी सांसें तेज होने लगीं। ठीक है। तो फिर ये मेरा शर्ट होगा। मेरा मोटा शर्ट। मेरी मोटी शर्ट में कोई गाँठ होगी। नहीं। जो शर्ट मैंने पहन रखी है उसका कपड़ा बहुत पतला है। मेरे दिमाग में बहुत से ख्याल आने लगे।

मैं तुरंत उठकर खड़ी हो गयी। मुझे कैसा लग रहा था। ये मैं थी। मेरी त्वचा। मेरी सूजन। एक ऐसी सूजन जिसका वहां होने का कोई मतलब नहीं बनता।

मैंने अपने पति को इसे दिखाया, जो बाल रोग विशेषज्ञ हैं।

उन्होंने मुझे दिलासा देते हुए कहा "ओह, ये फाइब्रॉइड सिस्ट जैसा लग रहा है। मैंने पिछले हफ्ते ही एक लड़की को देखा था जिसे यही था।"

"बिल्कुल ऐसा ही?" मैंने पूछा। मैं बहुत तेजी से हांफ रही थी।

"हाँ।"

तो ये वो था। मैंने उनपर भरोसा कर लिया। लेकिन फिर भी मुझे इसकी जांच करवाने की ज़रूरत थी। ताकि मुझे यकीन हो सके।

मैं धीरे से दोबारा लेट गयी। टेलीविज़न पर कोई कुछ कह रहा था, लेकिन सच कहूं तो मैं उसे सुन ही नहीं पायी। मैं बस अपने दिमाग में चल रहे ख्यालों को सुन रही थी।

मैं पता करुँगी कि ये क्या है।

कल।

अगले दिन सुबह मैंने स्थानीय हार्वर्ड वैनगार्ड को कॉल किया। मुझे दोपहर की अपॉइंटमेंट मिल गयी, जिसके लिए मैं शुक्रगुजार थी, लेकिन, सच कहूं तो मैं यह उम्मीद कर रही थी काश इसे इतनी अहमियत न दी जाती। अगर मैं उनसे ये कहती कि मेरी एक नयी उंगली उग आयी है तो क्या वो उसी दिन मुझे जांच के लिए बुलाते? या अगर मुझे फोड़ा होता तो? या एनल फिस्टुला होता तो, जो राजा लुई XIV को भी शर्मिंदा कर देता? इतनी जल्दबाज़ी करने का क्या कारण था? क्या आज वहां ज्यादा काम नहीं था, और उनके पास आज ज्यादा समय था जो आमतौर पर व्यस्त दिनों पर नहीं होता? क्या मैं बहुत ज्यादा सोच रही थी?

सबसे पहले मेरे रक्तचाप की जांच हुई। यह ज्यादा था। इसके बाद, मेरे सारे कपड़ों और भारी बूट्स सहित मेरा वजन लिया गया। यह मुझे परेशान कर रहा था कि ये सारी जानकारी, विशेष रूप से मेरा रक्तचाप जो

पहले की जांचों में हमेशा कम रहता था, उस डॉक्टर के पास जाने वाला था जो मुझे देखने के बाद बताने वाला था कि असल में क्या हो रहा था।

जब मैंने डॉक्टर को देखा, वो मुझे दयालु और खुशमिज़ाज़ लगीं, और शुरुआत में मुझे सहज करने के लिए उन्होंने मुझसे मुस्कुराते हुए थोड़ी-बहुत बातचीत की। इसके बाद हमने असली बात शुरू की।

उन्होंने पूछा, "क्या आपके परिवार में किसी को ब्रेस्ट कैंसर था?"

"हाँ। मेरी माँ को ब्रेस्ट कैंसर था। यह चौथे स्टेज पर था," मैंने कहा। "यह उनके फेफड़ों तक फ़ैल गया था।"

"वो कितने साल की थीं?"

मैंने उनकी सही उम्र याद करने की कोशिश की। "वो 60 साल से ज्यादा की थीं।"

डॉक्टर ने अपना सिर हिलाया और कुछ लिखा। उन्होंने मेरी गाँठ को दबाकर जांचना शुरू किया और अपनी उंगली से इसके घेरे को मापा, और मैंने उन्हें वो बात बता दी जो मेरे पति ने मुझे इसके बारे में कहा था कि ये बस एक मामूली फाइब्रॉइड सिस्ट है।

इसपर उन्हें हंसी आ गयी, और उन्होंने शालीनता से मुस्कुराते हुए कहा कि आप बस इसे छूकर नहीं बता सकते की ये क्या है। और इसके बाद उन्होंने कहा, "यह काफी कड़ा है, इसलिए सिस्ट नहीं हो सकता।"

लेकिन क्या उन्होंने बस अभी-अभी ये नहीं कहा था कि आप कुछ कह नहीं सकते? ओह, रहने देते हैं।

इसके बाद, उन्होंने कहा कि वो मेरी मैमोग्राफी और अल्ट्रासाउंड करने के लिए बोल देंगी, और साथ ही यह भी कहा कि वो इसे एक हफ्ते में करवाने की कोशिश करेंगी।

मेरे दिमाग में सबसे पहला ख्याल आया, एक हफ्ते में? जहाँ फोन पर एक मामूली बातचीत के आधार पर मुझे 24 घंटे के अंदर यहाँ बुला लिया गया, लेकिन अब जबकि एक बड़ी डॉक्टर ने बता दिया कि "ये सिस्ट नहीं हो सकता" तो मुझे अगले सात दिन बाद दोबारा बुलाया जाएगा?

कैंसर अनुसंधान में अपने खुद के अनुभव और प्रशिक्षण की वजह से मुझे इतना तो पता था कि जैविक रूप से, इस अनजान स्टेज पर, कुछ दिनों से वास्तव में कोई ज्यादा फर्क नहीं पड़ेगा। लेकिन मनोवैज्ञानिक रूप से, हर गुजरता हुआ दिन, जो मेरी समस्या पर केंद्रित नहीं था, मेरे लिए सदियों जैसा महसूस हो रहा था।

एक नर्स जो रिसेप्शन डेस्क पर खड़ी थी और हमारी बातचीत सुन रही थी, उसने चुपचाप डॉक्टर के जाने का इंतज़ार किया। इसके बाद उसने धीमी आवाज़ में, मुझे दिलासा देते हुए कहा, "वो शायद आपको एक-दो दिन में अपॉइंटमेंट दे सकते हैं। रेडियोलोजी स्टाफ ज्यादा व्यस्त नहीं होंगे।"

मैंने कॉल का इंतज़ार किया। लेकिन कोई कॉल नहीं आयी।

* * *

एक दिन बीत गया था, और मैं कम से कम यह जानना चाहती थी कि मैमोग्राफी और अल्ट्रासाउंड के लिए कौन सा दिन तय होगा। क्योंकि अगर मुझे एक पूरा हफ्ता इंतज़ार करता था, तो मैं शराब का स्टॉक रख लेती। अगर मेरे ऊपर तुरंत ध्यान दिया जाने वाला था तो मैं अपने लिवर को थोड़ा आराम देती।

इसलिए, अपने फोन को घूरने और इसकी घंटी बजने का इंतज़ार करने के बजाय, मैंने उन्हें खुद कॉल किया, तब जाकर मुझे पता चला कि डॉक्टर ने उन्हें ऐसा कुछ करने के लिए नहीं कहा है। सच में? ये क्या पागलपन था? उस समय मैंने अपने आपको बहुत काबू किया क्योंकि मेरा मन हो रहा था कि मैं फोन में घुसकर दूसरी तरफ मौजूद इंसान को एक घूसा मार दूँ।

मुझे इतना पता था कि जिस रिसेप्शनिस्ट से मेरी बात हो रही थी इसमें उसकी कोई गलती नहीं थी और इस वजह से मैंने उस बात को बहुत ज्यादा नहीं बढ़ाया। मुझे पता था ये मेरी हंसमुख कॉमेडियन डॉक्टर का किया-धरा है, जिन्होंने बिना किसी कारण के ही मुझे बीच में लटका दिया था जो मेरी समझ के बाहर था। आखिरकार, ये बहुत ज़रूरी मामला था, है न?

“ओह... क्यों...” मैंने कहा। "अपॉइंटमेंट क्यों नहीं तय किया गया?"

दूसरी तरफ से मुझे हकलाते हुए जवाब सुनाई दिया। "मुझे नहीं पता," रिसेप्शनिस्ट ने कहा। "मैं देखती हूँ हमारे पास क्या उपलब्ध है।" कुछ सेकंड शांत रहने के बाद उसने कहा, "ऐसा लगता है मैं आपके लिए जो सबसे जल्दी का समय दे सकती हूँ वो है... दो हफ्ते।"

मैंने सोचा, ये क्या मजाक है। "लेकिन एक नर्स ने मुझे बताया था कि मुझे एक-दो दिन में अपॉइंटमेंट मिल सकता है।"

"ओह, नहीं" रिसेप्शनिस्ट ने कहा। "मुझे नहीं पता आपसे ऐसा किसने कहा। हम बुक हैं।"

"ठीक है।" तंग आकर मैंने फोन रख दिया। इसके बाद, मैंने सोचना शुरू किया कि सबसे पास में शराब की दुकान कहाँ है।

नर्स/रिसेप्शनिस्ट ने मुझे वापस कॉल किया, जिसका नाम लिसा था। "हम आपकी समस्या हल कर सकते हैं," उसने कहा। "मेरे पास अबसे एक हफ्ते में एक जगह है।"

"शुक्रिया," मैंने कोमल शब्दों में कहा, लेकिन मेरी आवाज़ में निराशा अभी भी कम नहीं हुई थी। "मुझे वापस कॉल करने और जल्दी बुलाने के लिए शुक्रिया।"

उसने मुझे तीसरी बार कॉल किया और कहा, "लगता है, हमारी किस्मत अच्छी है। मुझे अभी-अभी कल के लिए एक जगह मिली है।"

मैं इस लिसा नाम की महिला की मेरे प्रति चिंता और दृढ़ता के लिए शुक्रगुजार थी, जिसे मैं हमेशा आसमान से उतरी हुई किसी देवदूत की तरह याद रखूंगी। अपना दुःख कम करने के लिए हफ्ते भर की शराब खरीदने के विचार के बजाय मेरे दिमाग में फ़ौरन शाम को जश्न मनाने के लिए शैम्पेन खरीदने का विचार चलने लगा।

मुझे कुछ जवाब मिलने वाले थे। और उन्हें पाने के लिए अब मुझे एक हफ्ते या उससे ज्यादा का इंतज़ार नहीं करना था।

या ऐसा मुझे लगा था।

* * *

जैसे ही मैं रेडियोलॉजी विभाग के फ्रंट डेस्क पर पहुंची, लिसा ने मुझे पहचान लिया। मैंने उसे गले लगाने की अपनी इच्छा को दबाया और अपनी मैमोग्राफी के लिए खड़ी हो गयी, जहाँ मुझे अपने दाएं स्तर को स्मॉर में मार्शमैलौ की तरह दबाकर चपटा होने का इंतज़ार करना था।

तकनीशियन के बाल सुनहरे थे, वो काफी फुर्तीली थी, और उसे देखकर ऐसा लग रहा था कि वो हर हालत में मेरी चिंता दूर करना चाहती थी जो मेरे पूरे चेहरे पर दिखाई दे रहा था।

उसने कहा, "आप घबराई हुई लग रही हैं।" उसकी बातों ने मुझे अपने पहले मैमोग्राफी की याद दिला दी, जब मेटास्टैटिक, हॉर्मोन-रेस्पॉन्सिव ब्रेस्ट कैंसर से मेरी माँ की लड़ाई अभी अपनी शुरुआत में थी और मैं बहुत ज्यादा भावुक थी और रो पड़ी थी। उसके बाद के सभी मैमोग्राम के दौरान मैंने खुद को संभाले रखा, लेकिन हर एक मैमोग्राम के दौरान मेरा दिमाग अपनी माँ पर चला जाता था।

उसने मुझे ली गयी तस्वीर देखने का इशारा किया। "मुझे ये बस एक सिस्ट जैसा लगता है। देखिये ये कितना गोल है?" वो जो दिखा रही थी उसे देखने के लिए मुझे बहुत ज्यादा ध्यान देना पड़ा, जो भूरे और काले रंग के बहुत सारे पिक्सल के बीच एक हल्का सा गोला था।

इसने मुझे सबसे खराब प्रोटीन जेल की याद दिला दी जिसपर मैंने पिछले बीते सालों के दौरान परीक्षण किया था, और मैंने इसे एक खराब एंटीबॉडी के साथ जांचा था, जिसके लिए मुझे अस्पष्ट सिग्नल अनुपात मिला था। ऐसे परिणाम को आसानी से समझना मुश्किल होता है और ये प्रकाशित करने के लायक नहीं होता।

मैं उस चीज को देख रही थी जिसे बाद में मुझे "सघन स्तन ऊतक" बताया गया, जिसके आगे देख पाना मुश्किल था। भले ही जो मांस की गाँठ इतनी बड़ी थी कि उसे आसानी से अपनी उंगली फिराकर महसूस किया जा सकता था, वो उस धुंधलेपन के बीच नंगी आँखों से स्क्रीन पर दिखाई भी नहीं दे रही थी।

इसके बाद मैंने अल्ट्रासाउंड, या सोनोग्राफी करवाई। यह मैमोग्राम का अच्छा विकल्प था, जिसमें मेरे अंदर की अजीब सूजन का पता लगाने के लिए ध्वनि तरंगों का इस्तेमाल किया गया। अल्ट्रासाउंड तकनीशियन भी मैमोग्राफी तकनीशियन की तरह हंसमुख और खुशमिज़ाज़ थी, और उसने अपनी मुस्कान और बातचीत से मुझे सहज महसूस करवाया। वो रेडियोलॉजिस्ट से बात करने कमरे से बाहर गयी, और मैंने अपने आपको इसके लिए तैयार किया कि वापस आकर वो कहेंगी कि ये सूजन वैसी ही है जैसी मैमोग्राफी तकनीशियन ने बताया था: कोई बड़ी बात नहीं, बस एक सिस्ट।

अब जबकि मेरे शरीर ने मुझे एक सख्त चेतावनी और दूसरा मौका दिया था तो वहां उनका इंतज़ार करते हुए, मैंने खाने-पीने में बदलावों की मानसिक सूची बनानी सूची कर दी, जो मैं अब ज्यादा स्वस्थ रहने के लिए करने वाली थी। मैं अभी इसी सोच में थी कि अब से मैं कॉफ़ी की जगह ग्रीन और ब्लैक टी ज्यादा पियूँगी,

ज्यादा मछली खाऊँगी और शाम में काम से घर जाते समय बाहर का खाना खाने की अपनी इच्छा पर लगाम लगाऊंगी, तभी पतले, लम्बे ग्रे बालों वाले रेडियोलॉजिस्ट कमरे में आये जिनकी आँखों में एक अजीब सी चमक थी जिसे समझना मुश्किल था।

उन्होंने मुस्कुराते हुए मुझसे हाथ मिलाया। मेरा हालचाल पूछा।

उन्होंने पूछा "आप क्या करती हैं?"

फिलहाल? मुझे लगा मैं बोलूं, चिंता। "मैं ल्यूकेमिया पर शोध करती हूँ," मैंने कहा।

"तो आप एक डॉक्टर हैं?" उन्होंने पूछा।

"शोधकर्ता," मैंने कहा। "मैंने फार्माकोलॉजी में पीएचडी की है।"

ये हालचाल अचानक बंद हो गया।

"अल्ट्रासाउंड के हिसाब से आपकी जो गाँठ है, वो सिस्ट तो बिल्कुल नहीं है," उन्होंने कहा। "यह एक असामान्य ऊतक है, इसलिए आपको बायोप्सी करवानी होगी।"

मैं इसकी उम्मीद नहीं कर रही थी। मैंने उनसे वही मज़ाक करने की कोशिश की जो मैं पीछे कुछ दिनों से लोगों से कर रही थी। "मैं बहुत व्यस्त हूँ," और "माफ़ करें, लेकिन मेरा शेड्यूल मुझे बीमार होने की इजाज़त नहीं देता।"

रेडियोलॉजिस्ट को यह मज़ाक अच्छा नहीं लगा, उन्होंने कहा, "मुझे यकीन है बहुत सारे लोग यही चीज कह सकते हैं।"

नहीं, मैंने सोचा। मैं बस मज़ाक कर रही थी। कसम से। मुझे सचमुच ऐसा नहीं लगता था कि मैं बहुत खास हूँ और सबसे अलग हूँ और मुझे यह बीमारी नहीं होनी चाहिए क्योंकि मैं कैंसर पर शोध करती हूँ, एक माँ हूँ और मेरे माता-पिता को बड़ी बीमारियाँ हैं जिनकी मुझे मदद करने की ज़रूरत पड़ती है, और ये सभी चीजें करने के लिए एक स्वस्थ इंसान के रूप में मुझे बहुत कम समय मिलता है। मैं बस ऐसे ही बोल रही थी।

रेडियोलॉजिस्ट ने मुझे बताया कि 75 से 80% बायोप्सी में कुछ भी नहीं निकलता, और तक़दीर आपके साथ है। इसके बाद उन्होंने आगे कहा, "आपके लिए मुझे लगता है ये या तो 0 होगा या 100%।"

वो बहुत अजीब इंसान थे।

मैंने उनसे ज्यादा जानकारी पाने की कोशिश करने की गलती कर दी थी और मुझे लगा था उससे मुझे बेहतर महसूस होगा। मैं वापस मैमोग्राफी और उस गोले के बारे में सोचनी लगी जो हंसमुख तकनीशियन ने धुंधले ग्रे बैकग्राउंड के बीच मुझे दिखाया था। "लेकिन यह काफी अलग है, है न?" मैंने पूछा।

रेडियोलॉजिस्ट ने ना में अपना सिर हिलाया और कहा, "हम अल्ट्रासाउंड के आधार पर अभी कुछ नहीं कह सकते। हमें बायोप्सी के नतीजों का इंतज़ार करना होगा।"

और इंतज़ार।

वाह, क्या बात है।

उस रात मेरे पति, बेटी और मैं खाना खाने के लिए एक रेस्टोरेंट में गए। मैंने अपना खाना ऑर्डर किया। यह ज़िन्दगी में मज़ा लेने या जश्न मनाने का समय नहीं लग रहा था। इसके बजाय, यह इस बात की याद दिला रहा था कि किस तरह से ज़िन्दगी एक पल में अचानक बदल सकती है, खासकर तब जब आप इसकी सबसे कम उम्मीद कर रहे होते हैं।

* * *

भाग 2 पर जाएँ...

दोनों तरफ से

लेखिका: एलेन वीसबर्ग

विषयसूची
भाग: 1, 2, 3, 4

भाग 2

बायोप्सी का दिन तय हो गया, जो मेरी मैमोग्राफी और अल्ट्रासाउंड के पूरे दस दिन बाद का था। वो दिन आने तक, मैंने लगातार अपना काम करते हुए, और अपने सहकर्मियों के साथ किसी भी पहले से तय मीटिंग को पूरा करते हुए, साधारण तरीके से दिन गुजारने का फैसला किया। अपने बिस्तर पर पड़े रहकर घंटों तक दीवार या मक्खियों को निहारते रहने की मेरी किसी भी इच्छा को सच्चाई का सामना करना ही था, और सच्चाई ये थी कि वक्त मेरे लिए ठहरने वाला नहीं था।

मेरी पहली मीटिंग एक सहकर्मी के साथ उसी कैंसर केंद्र के छोटे से ऑफिस में थी जहाँ मैं काम करती थी। यह सहकर्मी हेमाटोलॉजिस्ट-ऑन्कोलॉजिस्ट और एक पुराने सहयोगी थे। वह कई सालों से बहुत सारे प्रकाशित पेपरों के सह-सलाहकार और लेखक रहे हैं, और हमारी मीटिंग के समय, उन्होंने हाल ही में एक क्लीनिकल ट्रायल पूरा किया था, जो मेरे द्वारा परीक्षण में पता लगाए गए ल्यूकेमिया की दवा को एफडीए की मंजूरी के बहुत करीब ला रहा था।

कई साल पहले, उन्होंने मेरी माँ के स्कैन पर दूसरी राय पाने में भी मेरी बहुत मदद की थी, जिसमें उनके स्तन कैंसर की संभावित मेटास्टैसिस उनकी परिधि में दिखाई दी थी। उस समय मैंने कभी यह नहीं सोचा था कि कुछ सालों बाद मैं उनसे अपने लिए दोबारा मदद मांगूंगी।

उन्होंने पूछा "तो आप कैसी हैं?"

उन्हें क्या पता था कि यह सवाल मेरे लिए कितना बड़ा था, और इसकी वजह से हमें अपने नए डेटा पर बात करने में कितनी देर होने वाली थी। मैंने उन्हें बताया कि मैं थोड़े परेशानी भरे हालात से गुजर रही हूँ, और मेरे दाएं स्तर में एक असामान्य गाँठ का पता चला है और दस दिन में मेरी बायोप्सी होने वाली है।

उन्होंने कहा, "अगर आप चाहें तो मैं आपका अपॉइंटमेंट यहाँ सेटअप करने में मदद कर सकता हूँ।" वो हमारे प्यारे डाना-फार्बर कैंसर संस्थान के बारे में बात कर रहे थे।

मैंने मुस्कुराते हुए उनका शुक्रिया किया, लेकिन उन्हें मना कर दिया। उस समय, मैं पूरी तरह से जीना चाहती थी और उस गाँठ के मामूली होने की उम्मीद कर रही थी। इतनी जल्दी उस कैंसर अस्पताल में अपॉइंटमेंट लेना बहुत ज्यादा हो जाता जहाँ मैं काम करती थी, और इसके बजाय मैंने किसी तरह दस दिन निकालने का फैसला किया और शांत और सरल उत्तरी-मैसाचुसेट्स में स्थित हार्वर्ड वैनगार्ड में अपना अपॉइंटमेंट बनाये रखा।

हमारी बातचीत को ज्यादा निजी न बनाने की कोशिश करने के बावजूद, मेरे स्तन के आकार और सघनता के फायदे और नुकसान की बात होने लगी, क्योंकि सच्चाई यह थी कि मैं एक अशकेनाज़ी यहूदी थी, जिनकी आबादी में BRCA स्तन कैंसर का जीन ज्यादा पाया जाता है। उस बातचीत के अंधेरे में आंकड़ों की सच्चाई से उम्मीद की एक किरण जागी, क्योंकि स्तन में होने वाले अस्सी प्रतिशत विकास मामूली पाए जाते हैं, है न?

अगले दस दिन तक मैंने काम किया, और ज़िन्दगी का मज़ा लिया। मैंने अपनी एक संगीतकार दोस्त का पचासवां जन्मदिन मनाया, जो पास के शहर में एक रेस्टोरेंट में गाना गाती थी। हमने एक बड़ी खिड़की के सामने हमारे एक और दोस्त के साथ तस्वीर ली, जिसमें बाहर का फुटपाथ भी दिखाई दे रहा था। उस समय वहां चकाचौंध थी जिसकी वजह से हम दोनों के चेहरे साफ नहीं आ पाए। वो रोशनी मेरी हालत दिखा रही थी, क्योंकि मैं वहां रहने की पूरी कोशिश कर रही थी, लेकिन असल में मैं शायद वहां नहीं थी।

* * *

अल्ट्रासाउंड-गाइडेड बायोप्सी वाले दिन, मैं इतनी घबराई हुई थी कि मेरा पूरा शरीर काँप रहा था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों हो रहा है और मुझमें समाये हुए कौन से डर और चिंताओं ने मेरे अंदर हलचल मचा रखी है।

मुझे नहीं पता था बायोप्सी में दर्द होगा या नहीं, इससे गुदगुदी होगी या चुभन, ये मुझे गहरे, अंधेरे अवसाद में भेज देगा या मुझे ख़ुशी से नाचने पर मजबूर कर देगा। मुझे बस इतना पता था कि मेरे स्तन में मौजूद इस अजीबोगरीब गाँठ के एक टुकड़े को निकालकर उसका विश्लेषण किया जायेगा, और इसका नतीजा या तो कुछ होगा या कुछ भी नहीं होगा। और मुझे लगता है मेरी इतनी सी जानकारी मुझे लगातार कांपने पर मजबूर करने के लिए काफी थी।

मेरे बिस्तर के पास खड़ी नर्स ने जब मुझे अजीब तरीके से कांपते हुए देखा तो उसने मुझसे पूछा कि क्या मुझे ठंड लग रही है और मुझे कम्बल की ज़रूरत है। मैंने उसे समझाने की कोशिश की कि मुझे ठंड नहीं लग रही, बल्कि मुझे मेडिकल तकनीकों से घबराहट होती है। सच तो ये है कि मैं ये सोच रही कि काश मैं उस कमरे में उसके साथ होने के बजाय कहीं और होती, जहाँ मैं अपने शरीर का एक हिस्सा निकालने और जांच करवाने का इंतज़ार नहीं कर रही होती, लेकिन मैंने उससे ये नहीं कहा।

मेरी सबसे बड़ी चिंता यह थी कि बायोप्सी करने वाले डॉक्टर रेडियोलॉजिस्ट जितने खुशमिज़ाज़ होंगे या नहीं। ऑपरेशन के लिए इंस्ट्रूमेंट तैयार करते हुए, उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं क्या करती हूँ। अपनी घबराहट में मैंने बड़बड़ाना शुरू कर दिया और उन्हें बताया कि कैसे मैं कैंसर पर शोध करती हूँ और कैसे हम उन

दवाओं पर काम कर रहे हैं जो कैंसर की वजह बनने वाले प्रोटीन की चयनात्मक और लक्षित गिरावट को बढ़ावा देने के लिए इंट्रासेल्युलर मशीनरी को प्रभावित करते हैं। कांपते हुए मैंने बहुत कुछ कहा।

उन्होंने मुझसे हल्की-फुल्की बातचीत की, लेकिन इस बार अचानक उन्होंने मेरे सामने कोई ऐसी बात जाहिर नहीं की जिसकी वजह से मुझे धक्का लगे। उन्होंने मुझे बताया कि इस जांच का परिणाम दूसरे दिन आएगा और ये इस मेडिकल टीम के किसी सदस्य से नहीं आएगा।

मुझे पता लगा कि मेरी तरह रेडियोलॉजिस्ट भी यहूदी थे, और मैंने "जनजाति का सदस्य" होने पर उनकी चुटकी ली। हमने थोड़ी-बहुत बातचीत, हंसी-मज़ाक किया जिससे मेरी घबराहट शांत होने में मदद मिली।

मैंने उन्हें कुछ लोगों के नाम बताएं जिनके साथ मैंने काम किया था, और उन्होंने मज़ाक में कहा कि उन्हें वो नाम जाने-पहचाने लग रहे हैं। मैं अच्छा महसूस कर रही थी। इसने सचमुच भविष्य के बारे में मेरी घबराहट से मेरा ध्यान भटकाना शुरू कर दिया था। मैंने उन डॉक्टरों या शोधकर्ताओं के बारे में बताना जारी रखा जिन्हें मैं जानती थी, लेकिन मुझे दिल से यह बात पता थी कि उनके बारे में शायद उन्होंने कभी सुना भी नहीं होगा, तभी उन्होंने बात बदल दी और अपने काम की बात पर आ गए।

"तो अब हम मेरे काम के बारे में बात नहीं कर सकते?" मैंने निराशा भरे लहजे में पूछा।

"नहीं, माफ़ करें," उन्होंने कहा। "हमें शुरू करना होगा।"

मैं उनका ध्यान बिल्कुल नहीं भटकाना चाहती थी, ताकि उनकी कोशिश बेकार न हो, और उन्हें वापस मेरा ऑपरेशन न करना पड़े। मैं फौरन बुरे ख्यालों से परेशान होने लगी, जो दुर्भाग्य से, उस समय बिल्कुल भी मुश्किल नहीं था।

उन्होंने पूछा, "क्या आप स्क्रीन देखना चाहती हैं?" उनका मतलब था कि जब तक वो मेरा शरीर काट रहे थे, तब तक क्या मैं अल्ट्रासाउंड की स्क्रीन पर वो अजीब तस्वीरें देखना चाहती थी, जिनके बारे में मुझे समझाना पड़ेगा।

क्या आप मुझे उल्टी करवाना चाहते हैं? मैंने सोचा। मैंने शालीनता से उन्हें मना कर दिया और द एक्सॉर्सिस्ट की लिंडा ब्लेयर की तरह अपना सिर पूरी तरह से फेर लिया, जिसका ख्याल अचानक ही मेरे दिमाग में आया था।

नौ बेहद दर्दनाक और कटने के एहसास के बाद, मुझे इस बात का दुःख था कि मैंने उनसे ज्यादा एनेस्थेटिक क्यों नहीं लिया। जब वो मेरे शरीर के अंदर मौजूद अनाम चीज का सैंपल ले रहे थे, तब मुझे उससे ज्यादा दर्द महसूस हुआ जितनी मैंने उम्मीद की थी। लेकिन क्योंकि यह चुभता हुआ तेज दर्द नहीं था, इसलिए मैंने बहुत ज्यादा रोना-धोना न मचाने का फैसला किया और मर्द बनने की कोशिश की। जिस चीज से मैं गुजर रही थी, उसके बारे में सोचने पर मैं मन ही मन सोच रही थी कि काश मैं सचमुच मर्द होती। मुझे बाद में यह पता चला कि बिना दर्द वाली बायोप्सी के लिए इंसान को पूरी तरह से सुन्न करना ज़रूरी होता है।

उस ऑपरेशन से ज्यादा बुरा वो बर्फ वाला ठंडा पैक था जो उन्होंने बायोप्सी वाली जगह लगाया था। उन्होंने मुझे थोड़ी देर उसे वहां रखने के लिया कहा, चूँकि वो बस मेरे जख्म पर नमक छिड़कने जैसा था, इसलिए मैंने इसे बस थोड़ी देर वहां लगाए रखना का नाटक किया।

इसके बाद एक नर्स मुझे दूसरे कमरे में लेकर गयी जहाँ मेरी "जेंटल मैमोग्राफी" होने वाली थी ताकि वो उस चिप की तस्वीर ले सकें जो उन्होंने मेरी गाँठ के अंदर लगायी थी। वहां पर वही तकनीशियन मेरा इंतज़ार का रही थी जिसमें मेरी असली मैमोग्राफी ली थी। ये वही थी जिनसे मुझे यह बताकर शांत रखने की कोशिश की थी कि वो गाँठ उसे बस एक सिस्ट जैसी लग रही थी। मैं सोच रही थी कि बायोप्सी के बाद जब मैं कमरे में आयी तब उसके मन में क्या चल रहा था, क्योंकि वो मुझे सीधे नहीं देख रही थी, और उसके चेहरे पर एक दया भरी मुस्कान थी।

बायोप्सी वाली जगह पर बर्फ लगाए रखने के बावजूद, मेरा बहुत खून निकल रहा था, जिसकी मैमोग्राफी तकनीशियन ने उम्मीद नहीं की थी, क्योंकि वो फौरन रुई लाने के लिए कमरे के बाहर भाग गयी। मेरे बगल वाले काउंटर पर टिश्यू का बॉक्स रखा हुआ था। मैंने उस समय इसके मतलब पर ज्यादा गौर किये बिना उसमें से एक टिश्यू निकालकर अपना खून पोंछना शुरू कर दिया। ट्यूमर रक्त वाहिकाओं से खुद को घेरे रखते हैं।

वो तकनीशियन मुट्ठीभर रुई के साथ आयी, लेकिन तब तक टिश्यू पेपर और मेरे अंगूठे ने अपना काम सफलतापूर्वक पूरा कर दिया था। उसने क्लिप की तस्वीर लेने के लिए मुझे सही स्थिति में लाने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। यह इतनी अंदर थी कि इसे मैमोग्राफी से आसानी से नहीं देखा जा सकता था। चूँकि, अल्ट्रासाउंड में पहले ही वो क्लिप देख ली गयी थी, इसलिए मैमोग्राफी ना करने का फैसला किया गया।

मुझे और ज्यादा बेकार के विकिरण और बेचैनी से छुटकारा देकर घर भेज दिया गया। मैंने बायोप्सी वाली जगह पर बर्फ रखकर, कुछ घंटे बिस्तर पर आराम किया। मुझे लैब में काम पूरा करना था, और इसलिए मैं वहां चली गयी। माइक्रोएटर प्लेट में पिपेट से ल्यूकेमिया कोशिकाओं को छोटे-छोटे गड्ढों में डालते हुए, मेरे अंदर एक अजीब सी हलचल हो रही थी, मैं उन चीजों के बारे में सोच रही थी जिनसे मुझे गुजरना पड़ा था। काटने की आवाज़। दर्द। बर्फ। खून।

* * *

तीन दिन बाद, मैं और मेरे पति बायोप्सी के नतीजे लेने के लिए तय अपॉइंटमेंट पर गए। एक बार फिर बूट्स और पूरे कपड़ों के साथ मेरा वजन लिया गया और मेरी रक्तचाप की जांच हुई, जो एक बार फिर ज्यादा था। हम ऑफिस में मेरे प्राथमिक देखभाल चिकित्सक का इंतज़ार कर रहे थे जिसे किसी ने मेरे लिए नियुक्त किया था और जिनसे मैं कभी नहीं मिली थी। मैं ये नहीं कह सकती कि उस समय मैं बहुत ज्यादा घबराई हुई या बेचैन महसूस कर रही थी। आज जब उसके बारे में सोचती हूँ तो बेशक वो एक गलती लगती है।

अपने बीते सालों में मैंने अक्सर यह पाया था कि थोड़ी बहुत घबराहट के साथ निराशावाद से मुझे बुरी चीजों को दूर रखने में मदद मिलती थी। ये ऐसा था मानो इस तरह की सोच आपको हैरान और परेशान करने वाली ताकतों की शक्ति छीन लेती है, और वो हार मान लेते हैं, क्योंकि अब इसमें कोई मज़ा नहीं रह जाता। ज़िन्दगी

भर, मेरे दोस्त मुझे मज़ाक-मज़ाक में पागल कहते आये थे, लेकिन उन्हें ये नहीं पता था कि पागल बनना मेरा बचने का तरीका था।

मैं अपने पति के बगल में एक कुर्सी पर बैठी थी, और सोच रही थी कि मुझे जो हुआ है वो हॉर्मोन से प्रेरित, एक मामूली फाइब्रोएडीनोमा है जिसके बारे में मैंने पढ़ा था, जो मटर के दाने से लेकर गोल्फ बॉल तक के आकार का हो सकता है। गोल्फ बॉल! मैं अपने अंदर इतनी बड़ी चीज होने के बारे में सोच भी नहीं सकती थी। और मेरी गाँठ का आकार लगभग एक छोटे कंचे जितना था।

मेरी इस सोच को बढ़ावा देने वाला तथ्य यह भी था कि मैमोग्राफी और अल्ट्रासाउंड के समय मैं प्रीमेनोपॉज़ल थी। जाहिर तौर पर मेरे अंदर बहुत सारा बेकार का हॉर्मोन मौजूद था जो इधर-उधर घूम रहा था, जिससे मुझे हर महीने सीने में अजीब सी सनसनी महसूस होती थी और इसी की वजह से मेरे अंदर अजीब सी चीजें हो रही थीं और ये गाँठ उभरकर आ गयी थी।

इसके अलावा, इस साल की शुरुआत में ही मैं 50 साल की हुई थी, और ये वही उम्र है जिसमें लोग पॉलीप्स की जांच करवाने के लिए बहुत उत्साहित करते हैं और औरतों को मेनोपॉज़ में जाना शुरू होने के लिए ताने मारे जाते हैं। निश्चित रूप से, ऐसे में मुझे बहुत सारे अजीबोगरीब अनुभव करने ही थे, और मैं यह मान चुकी थी कि मुझे जो है वो बस एक मामूली सा मांस का टुकड़ा है जो ऐसे समय में मेरे शरीर में गलती से आ गया है।

प्राथमिक देखभाल चिकित्सक अंदर आयीं और उन्होंने मुझसे और मेरे पति से हाथ मिलाया। वो ज्यादा खुश नहीं लग रही थीं, जिसे बाद में मेरे पति ने बताया कि उन्हें तभी पता चल गया था कि वो क्या कहने वाली थी। प्राथमिक देखभाल चिकित्सक ने कहा कि "इनवेसिव डक्टल कार्सिनोमा के लिए आपकी बायोप्सी की रिपोर्ट पॉजिटिव आयी है।" इसके बाद वो सांस लेने के लिए भी नहीं रुकीं और उन्होंने आगे कहा: "क्या आपको एंटीवैन के लिए निर्देश चाहिए?"

उस समय मुझे यह पता चल गया था कि मौत का सौदागर एक औरत के रूप में मेरे सामने आ गया है। और अगर मैं बंदरों के साथ किसी जंगल में पली-बढ़ी होती और मुझे कैंसर के बारे में कुछ भी नहीं पता होता तो शायद उनके मुंह से लॉरजेपाम लेने का निर्देश देने का ऑफर सुनकर मुझे यह नहीं पता चलता कि मुझे कुछ बहुत, बहुत बुरा हुआ है।

काम पर जाते समय रास्ते में मुझे हर रोज हार्वर्ड वैनगार्ड बिल्डिंग के बगल से जाना पड़ता है। वो बिल्डिंग हमेशा मुझे वो पल याद दिलाती है, जब जांच के बाद इसके बाहर मेरे पति मेरे सामने खड़े थे। मुझे लगता है जब किसी इंसान के मौत की बात आती है तो उसके अंदर छिपा हुआ दार्शनिक बाहर निकलना स्वाभाविक होता है। अचानक मैंने सोचना शुरू कर दिया कि ज़िन्दगी कितनी अच्छी या बुरी रही है या मैं कितनी अच्छी या बुरी रही हूँ, और क्या चीजें बेहतर या अलग हो सकती थीं या बेहतर होना या अलग होना शुरू हो सकती थीं।

मैंने पूछा, "क्या तुम मेरे बिना ज्यादा खुश रहोगे?"

ये सुनकर उनके चेहरे पर "तुम पागल हो गयी हो" के भाव आ गए थे, और उसके बाद उन्होंने कहा "बिल्कुल नहीं। तुम ये क्या बोल रही हो?"

"तुम मुझसे प्यार करते हो?"

"हाँ"

उन्होंने मुझे गले लगाया, चूमा, और मार्च के ठंडे दिन में हमारे बाल हवा में लहरा रहे थे।

* * *

भाग 3 पर जाएँ...

दोनों तरफ से

लेखिका: एलेन वीसबर्ग

विषयसूची
भाग: 1, 2, 3, 4

भाग 3

इसके बाद, हार्वर्ड वैनगार्ड के माध्यम से मुझे एक सर्जन से मिलने का समय दिया गया। उनका रंगरूप सांवला था और मुझे उनका लहजा समझ नहीं आ रहा था लेकिन वो बहुत अच्छे इंसान थे। माइग्रेन से ग्रस्त होने के बावजूद, वो मुस्कुरा रहे थे और मिलनसार थे और उन्होंने मुझे ज़िन्दगी के अगले पचास साल देने की गारंटी दी, हालाँकि, उन्होंने कहा कि वो उससे ज्यादा का वादा नहीं कर सकते। उन्होंने मुझे बताया कि मेरा कैंसर "ब्रेस्ट कैंसर की बगीचे की किस्म" जैसा है।

एस्ट्रोजन-रिसेप्टर और प्रोजेस्टेरोन-रिसेप्टर से भरा हुआ, हॉर्मोन-रेस्पॉन्सिव, एचईआर2 नेगेटिव। मैं जानती थी, वो बात उन्होंने मुझे खुश करने के लिए कही थी, लेकिन मैं कभी सपने में भी अपने बगीचे में इस तरह की फल और सब्जियां उगाने के लिए नहीं चुनती।

उन्होंने मुझे ब्रेस्ट कैंसर की बुनियादी चीजें समझायीं और बताया कि किस तरह से यह अपने मिशन को शरीर में कहीं और ले जाने से पहले सेंटिनल लिम्फ नोड में थोड़ी देर रुकता है। सर्जरी के समय सेंटिनल लिम्फ नोड निकाल दिया जायेगा और उसमें कैंसर होने का परीक्षण किया जायेगा।

उन्होंने मुझे आनुवंशिक परीक्षण करवाने का सुझाव दिया ताकि पता चल सकें कि मेरे अंदर BRCA जीन है या नहीं, जो उपचार की प्रक्रिया को बदल देता, क्योंकि BRCA की वजह से गर्भाशय और ब्रेस्ट कैंसर का बहुत ज्यादा जोखिम होता है और इसके लिए डबल मस्टेक्टॉमी और गर्भाशय निकालना ज़रूरी हो जाता। हालाँकि, लिम्फ नोड्स की जांच करने के लिए और ट्यूमर कहाँ तक फैला है उसका सही अंदाज़ा लगाने के लिए उन्होंने मुझे MRI का सुझाव दिया। उन्होंने मेरे बाजुओं के नीचे के हिस्से को छुआ और कहा कि उन्हें कोई बड़े लिम्फ नोड्स महसूस नहीं हो रहे हैं।

मेरे कुछ दोस्त और परिवार वाले मुझे बॉस्टन के उसी कैंसर अस्पताल में इलाज करवाने के लिए बोल रहे थे जहाँ मैं काम करती थी, ऐसा इसलिए क्योंकि इससे मुझे अपने काम से अपॉइंटमेंट पर जाने में ज्यादा आसानी होती। अब वो ऑफर लेने का समय आ गया था, जो मेरे सहयोगी ने उस दिन मुझे ऑफिस में दिया था और साथ ही मुझे ये सच्चाई भी माननी थी कि मैं उसी अस्पताल की कैंसर की मरीज बनने के लिए तैयार थी जहाँ

मैंने बीस साल से भी ज्यादा समय तक पूरी मेहनत और यांत्रिक तरीके से ल्यूकेमिया के मरीजों के परिधीय रक्त और अस्थि मज्जा कोशिकाओं का परीक्षण किया था।

जब वो सर्जन अपने माइग्रेन के दर्द के बावजूद मेरे इलाज के बारे में चर्चा कर रहे थे तो उस दयालु सर्जन के ऑफिस में बैठकर उनकी बातें सुनते हुए मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं उन्हें धोखे में रख रही हूँ। लेकिन अच्छी बात यह है कि मेरे बजाय उन्होंने खुद ये बात बोल दी कि अक्सर मरीज बॉस्टन में किसी दूसरे डॉक्टर की राय भी लेते हैं। उन्होंने मुझे कहा कि मैं भी ऐसा कर सकती हूँ। हालाँकि, उन्होंने मुझसे ये बात भी कही कि दूसरे डॉक्टर भी वही कहेंगे जो वो मुझसे कह रहे थे। मैंने काफी संकोच के साथ उन्हें यह बताया कि मैं उसी जगह इलाज करवाने के बारे में सोच रही थी जहाँ मैं काम करती थी, लेकिन केवल इसलिए क्योंकि वहां मुझे ज्यादा सुविधा होगी। वो मेरी बात समझ रहे थे।

बिल्डिंग से निकलने से पहले, मैंने अपने पति से कहा कि मैं रेडियोलॉजी में नर्स/रिसेप्शनिस्ट, लिसा, से मिलना चाहती थी। मुख्य डेस्क पर बैठी हुई नर्स ने मुझे बताया कि वो कहा मिलेगी, और जब लिसा ने मुझे देखा तो तुरंत फ्रंट डेस्क के पीछे मौजूद दरवाज़े से अपने पीछे आने का इशारा किया। मैंने उसे अपनी जांच के बारे में बताया, और उसने मुझे इसकी जानकारी देने के लिए शुक्रिया किया, और बताया कि नर्सों को अपने से किसी मरीज से संपर्क करना मना था। उसने मेरा हौसला बढ़ाने के लिए कुछ बातें की, और इसके बाद मुझे गले लगाया। वो एक अजनबी थी, लेकिन उसने मेरी बहुत ज्यादा मदद की थी, और शायद उससे मैं दोबारा कभी नहीं मिल पाऊँगी, लेकिन मैं उसे कभी भूलूंगी भी नहीं।

* * *

असली कहानी बिल्डिंग की नौवीं मंजिल पर स्थित डाना-फार्बर कैंसर संस्थान से शुरू हुई, जो उस संस्थान के बगल में था जहाँ मैं अपना ल्यूकेमिया शोध करती थी। मेरी पहली मीटिंग लाल बालों वाली एक ऑन्कोलॉजिस्ट से थी, जिनका चेहरा जाना-पहचाना था, शायद इसलिए क्योंकि मैंने अस्पताल के मासिक समाचार पत्र में प्रकाशित उनकी कई उपलब्धियों के बारे में दिए गए लेखों में उन्हें देखा था।

उनके साथ एक नौजवान, काले बालों वाला मेडिकल सहायक था। जिसे उस समय मेरे चेहरे का रंग उड़ते हुए देखने का मौका मिला, जब ऑन्कोलॉजिस्ट ने मेरे दाएं कांख में जोर से अपनी उंगलियां धँसाते हुए कहा "रुको। ये क्या है?"

ये दूसरी बार था जब मैं मांस के किसी टुकड़े की तरह अपनी पीठ के बल जांच वाली मेज पर लेटी थी। उनके सहायक ने बस कुछ समय पहले ही मेरी जांच की थी, और उस दयालु सर्जन की तरह उन्हें भी कुछ बड़ा या अजीब नहीं महसूस हुआ था, जिन्होंने मुझे शुरुआत में देखा था।

अपनी कांख की जांच के बाद मैं धीरे से उठकर बैठ गयी और वापस अपना कपड़ा कंधे पर डाल लिया। मैंने ऑन्कोलॉजिस्ट को जांच वाली मेज से कुछ कदम पीछे जाते हुए देखा।

उन्होंने मेरी आँखों में देखकर कहा, "माफ़ करें, मुझे आपको बताना होगा," मानो इस बात को सीधे बताने के लिए उन्हें मुझे कोई कारण देने की ज़रूरत थी।

ये समाचार पाने के लिए मेरा दिन अच्छा नहीं था। ऑन्कोलॉजिस्ट ने मुझे समझाया कि मेरे अंदर कम से कम एक लिम्फ नोड ऐसा हो सकता है जो ज्यादा बड़ा है और शायद उसमें कैंसर भी हो सकता है, इसके अलावा, मेरे स्तन की गाँठ का आकार ऐसा था कि उसके लिए साधारण, टिश्यू-कंज़र्विंग लम्पेक्टॉमी संभव नहीं होती। उन्हें पूरा भरोसा था कि आगे मैं जिस सर्जन से मिलने वाली थी वो भी ट्यूमर को पहले छोटा करने का सुझाव देंगे और इसके बाद ज्यादा सरल, कम इनवेसिव सर्जरी करेंगे।

उन्होंने मुझे क्लीनिकल ट्रायल में नाम दर्ज़ करवाने और एक साथ ल्यूप्रॉन और टेमॉक्सीफेन उपचार देने का ऑफर दिया, जो क्रमशः गर्भाशय से एस्ट्रोजन का उत्पादन बंद कर देता है, और एस्ट्रोजन को एस्ट्रोजन रिसेप्टर के लिए प्रतिक्रिया करने से रोकता है। मुझे दोनों की सलाह दी गयी क्योंकि जांच के समय मैं प्रीमेनोपॉज़ल थी और मेरे हॉर्मोन-रेस्पॉन्सिव कैंसर को निकालने और इसे बढ़ने से रोकने के लिए एस्ट्रोजन का उत्पादन बंद करना और एस्ट्रोजन की गतिविधि को रोकना ज़रूरी था।

जिस भी प्रकार के अध्ययन के लिए मुझे चुना जायेगा उसके आधार पर, मुझे पेलबोसीस्लिब नामक तीसरी दवा मिलना भी संभव था, जो कोशिका के विभाजन में शामिल प्रोटीन को अवरोधित करने के लिए होती है और पोस्ट-मेनोपॉज़ल महिलाओं में मेटास्टैटिक ब्रेस्ट कैंसर के लिए एफडीए से पहले ही स्वीकृत हो चुकी थी।

मेरे दिमाग में एक छोटी सी कल्पना चल रही थी, जिसमें कैंसर जल्द से जल्द मेरे अंदर से निकाल दिया जाता, और मैं अपनी पहले जैसी खुशहाल ज़िन्दगी में वापस चली जाती और एक बार फिर से मेरी दुनिया में सबकुछ ठीक होता। लेकिन मेरी सच्चाई ये थी कि मैं अपने दाएं स्तन में कैंसर से भरी गाँठ के साथ छह महीने घूमने वाली थी, जो उम्मीद थी, हर रोज टेमॉक्सीफेन और पेलबोसीस्लिब टैबलेट खाने से और महीने में एक बार ल्यूप्रॉन के इंजेक्शन से छोटा हो जाता, जिसके बाद सर्जरी और रेडिएशन से गुजरना पड़ता एवं इलाज में कीमोथेरेपी जैसे दूसरे और उपचार शामिल होते या नहीं इसपर भी एक बड़ा सवाल बना हुआ था।

यानी, ये भयानक सपना जल्दी खत्म नहीं होने वाला था।

सर्जन मुझसे थोड़ी देर के लिए मिलें। वो बड़ी भूरी आँखों और सौम्य मुस्कान वाले विनम्र व्यक्ति थी। ऑन्कोलॉजिस्ट को जो लगा था उसके विपरीत, उन्होंने मुझे ये दिलासा दिया कि मेरे स्कैन के हिसाब से लिम्फ नोड के मामले में उन्हें कुछ भी संदिग्ध नहीं लगा, और बायोप्सी के बाद प्रतिक्रियात्मक रूप से लिम्फ नोड्स का बड़ा होना आम बात थी, उस समय वो मुझे किसी देवता की तरह दिखाई दे रहे थे।

आह, हाँ! मैंने सोचा। ऑन्कोलॉजिस्ट गलत। सर्जन सही। अपनी बेहद सरल, काली-सफ़ेद सोच के साथ मैंने धीरे से सहमति में सिर हिलाया। या, अगर सच कहूं तो मैंने अपनी बेहद मनचाही सोच के साथ हाँ में सिर हिलाया। तभी मेरे दिमाग में एक तर्कसंगत विचार आया, और इसने मुझे याद दिलाया कि कोई चीज केवल मेरे चाहने से वैसी नहीं होगी जैसी ये थी, और इन दोनों विपरीत रायों में से कोई एक राय ही सही थी, और बाद में केवल जांच से ही सच्चाई का पता लगेगा।

ब्रेस्ट कैंसर के बारे में कुल मिलाकर सर्जन ने मुझे वही बुनियादी चीजें बतायीं जो पहले सर्जन ने बताई थीं। यह जानकर कि ऑन्कोलॉजिस्ट ने एक दिन पहले क्लीनिकल ट्रायल के बारे में बता दिया था, और शायद मुझे ज्यादा उलझाने के लिए और मेरे लिए यह फैसला कर पाना नामुमकिन बनाने के लिए कि मैं क्या करूँ, उन्होंने मुझे समझाया कि अध्ययनों से पता चला है कि चाहे प्री-ऑप ड्रग ट्रीटमेंट पहले की जाए या सर्जरी,

अनुमानित जीवनकाल एक ही होता है। उन्होंने कहा कि वो सर्जरी किसी भी समय कर सकते हैं, लेकिन ट्यूमर के आकार को देखते हुए, यह दिखने में बुरा लगेगा।

मेरे अंदर के उस हिस्से ने मुझपर काबू कर लिया जो चाहता था कि बस किसी भी तरह मेरे शरीर से कैंसर बाहर निकल जाए और मैंने उनसे कहा, "मुझे ऐसी चीजों से कोई फर्क नहीं पड़ता कि ये दिखने में कैसा लगेगा। मैं कोई प्लेबॉय बन्नी या न्यूडिस्ट कॉलोनी की सदस्य नहीं हूँ।"

इसके बाद उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "फिर मैं आपके लिए यह करने के लिए तैयार हूँ।"

* * *

इतने सालों तक स्कूल में रहने के बावजूद, मुझे हमेशा से परीक्षाएं पसंद नहीं थीं। मुझे उनके लिए पढ़ने में, और यहाँ तक कि काफी हद तक परीक्षाएं देने में भी परेशानी नहीं होती थी, लेकिन उनके परिणाम के समय होने वाली बेचैनी मुझे बिल्कुल पसंद नहीं थी।

कैंसर का पता चलने के बाद पहले कुछ हफ्ते परीक्षाओं से भर पड़े थे, जिनसे मुझे वैसी ही बेचैनी महसूस होती थी जैसी स्कूल के दिनों में हुआ करती थी। लेकिन वहां परीक्षाओं के अंत में "ए", "बी", या "सी" ग्रेड नहीं मिलने वाले थे। और सच कहूं तो इनकी वजह से मुझे अपने पुराने परीक्षा देने वाले दिन ज्यादा अच्छे लगने लगे थे।

निर्धारित जांचों की सूची में से मुझे सबसे पहले आनुवांशिक परीक्षण करवाना था, ताकि यह पता चल सके कि मेरे अंदर BRCA जीन, या कोई और कैंसर उत्पन्न करने वाला पारिवारिक जीन है या नहीं, जिससे मुझे अपनी गाँठ के बारे में थोड़ी ज्यादा जानकारी मिल सकती थी और साथ ही मुझे यह भी पता चलता कि भविष्य में मुझे और क्या होने का ज्यादा जोखिम है।

जब जेनेटिसिस्ट ने मेरे हाथ से खून निकालने की अनुमति मांगी तो मैंने उनसे पूछा कि क्या उनके पास कोई और कम इनवेसिव विकल्प मौजूद है, जैसे लार का नमूना या कुछ ऐसा। मुझे उस समय इसका कोई अंदाज़ा नहीं था कि अगले बारह महीने इंसानी पिन कुशन की भूमिका में जाने के बाद, जब मेरे अंदर सुइयां चुभाकर चीजें डाली या निकाली जाएँगी तब मुझे उनकी चुभन महसूस ही नहीं होगी।

लेकिन उस दिन, जेनेटिसिस्ट ने मुझसे मज़ाक में कहा कि उसने पहले कभी प्लास्टिक कलेक्शन ट्यूब का इस्तेमाल नहीं किया जिसमें मैं एक क्यू-टिप बार-बार निचोड़ रही थी और जिसे बार-बार मेरे मसूड़ों पर दबाया जा रहा था। बहुत हैरानी कि बात थी कि उस रुई में मेरे मुंह से दो ट्यूब भरने लायक लार निकल आया था, जिससे मैं अपने जीन पूल की सच्चाई जानने के ज्यादा करीब आ गयी थी।

जेनेटिसिस्ट ने ईमेल करके मुझे यह अच्छी खबर दी कि मैं BRCA नेगेटिव थी और उससे भी अच्छी खबर ये थी कि मैं सूची पर मौजूद बाकी सभी बुरे जींस के लिए भी नेगेटिव थी जिनके लिए मेरी जांच की गयी थी। हाल ही में मैंने एक खबर में स्तन कैंसर से संबंधित कुछ समय पहले पता लगाये गए 72 नए आनुवंशिक उत्परिवर्तनों के बारे में एक लेख पढ़ा था। सच्चाई यह थी कि मुझे भी उसी उपश्रेणी की वही बीमारी हुई थी जो मेरी माँ को थी, और मेरे पिता की तरफ की कई चचेरी बहनों को स्तन कैंसर हुआ था, फिर भी मुझे ऐसा

लग रहा था कि मुझे कुछ ऐसा हो सकता है, जो विरासत में मिला हो, और बुरा व्यवहार करने वाले ऐसे जींस के समूह में आता हो शायद जिसका अभी तक पता नहीं लगाया गया है।

लेकिन, इसी तरह, मार्शचिनो चेरी से सजाये गए कृत्रिम लाल, पीले और नीले रंगों वाले रेनबो आइसक्रीम केक के लिए प्यार, या हॉटडॉग गर्म होने का इंतज़ार करते समय माइक्रोवेव के बहुत करीब खड़ा रहना, या बस हॉटडॉग खाना भी इस बीमारी का कारण हो सकते थे। क्योंकि पूरे भरोसे के साथ यह कहना नामुमकिन था कि मेरे और मेरे परिवार के लिए सभी बुराइयों का असली कारण क्या था, साथ ही क्या यह कोई एक कारण था या बहुत सारे कारण थे और क्या ये कारण मेरे शरीर के अंदर थे या शरीर के बाहर थे, लेकिन मैंने इस सच्चाई से ही अपने दिल को तसल्ली दी कि BRCA सहित, जिन सभी बुरे जींस के लिए मेरा आनुवंशिक परीक्षण किया गया था उन सभी के लिए मेरा नतीजा नेगेटिव था।

कम से कम मुझे इस एक चीज की चिंता नहीं करनी थी।

* * *

मेरी जांच की सूची पर अगला नंबर मैग्नेटिक रेजोनेंस इमेजिंग (या MRI) का था, जो मेरे सीने का होने वाला था और जैसा कि मेरे पहले सर्जन ने बताया था, इससे पता चलता कि मेरे दाएं स्तन में ट्यूमर कहाँ तक फैला हुआ है। इस बारे में सोचने पर, मुझे लगता है कि किसी चमकने वाले खिलौने की तरह मेरे सीने में फैले हुए कैंसर को दिखाने के लिए इस्तेमाल होने वाले MRI के लिए मेरा डर थोड़ा तर्कहीन था। लेकिन कैंसर का पता चलना अपने आपमें ही मेरे दिमाग को बेहद अँधेरी जगह में डालने के लिए काफी था। मैंने हमेशा अपने आपको इस निराशावाद से लड़ते हुए पाया था।

कंट्रास्ट डाई डालने के लिए MRI से पहले मेरे हाथ में एक IV लगा दिया गया था। इसके तुरंत बाद, इस स्थिति में अपनी प्रयोगशाला में जाकर एक प्रयोग पूरा करने के बारे में कुछ बुरा और ऊर्जा से भरने वाला दोनों था। मुझे लगता है, एक बुरे और अजीब तरीके से, यह एक तरह का मल्टी-टास्किंग था।

मैंने अपना प्रयोग खत्म करने के लिए बहुत सावधानी से समय निर्धारित किया था ताकि MRI पर जाने के लिए मेरे पास केवल पर्याप्त समय बचे। जब मुझे मशीन से अंदर ले जाया जाने लगा, तब मेरे मन में किसी इंसान को ज़िंदा दफनाने की तस्वीर घूमने लगी। मुझसे पूछा गया कि क्या मैं अपने कानों पर लगे हेडफोन से गाने सुनना चाहूंगी। मैंने "हाँ" में जवाब दिया और जब मुझसे पूछा गया मुझे किस तरह का गाना सुनना पसंद है तो मैंने "क्लासिक रॉक" बताया। उस समय मैंने लेड ज़ेपलीन और एसी/डीसी के बनाये गए आज तक के सबसे बुरे तीन-चार गाने सुने होंगे। वो गाने इतने बेकार थे कि उनकी जगह मुझे MRI की ठक-ठक और धक-धक की आवाज़ ज्यादा अच्छी लगने लगी थी।

मेरी वाहिकाओं से गुजरता हुआ कंट्रास्ट डाई ठंडा महसूस हो रहा था, और इसके बाद एक अजीब सी स्वाद और महक आयी, जिसे एक इंसान होने के नाते मैं कह सकती हूँ कि किसी भी इंसान को चखना और सूंघना नहीं चाहिए, जिसने मेरे दिन में एक और सच्चाई जोड़ दी थी।

मेडिकल कर्मचारी ने फोन से मुझे MRI का परिणाम बताया। अच्छी खबर ये थी कि मेरी बायीं तरफ कुछ भी अजीब नहीं था, जिसका मतलब था कि जो कुछ भी होना था वो मेरे दाएं तरफ ही होता। लेकिन, MRI से

यह पुष्टि हो गयी थी कि मेरा दायां हिस्सा थोड़ा काबू से बाहर था। ऑन्कोलॉजिस्ट ने जिस लिम्फ नोड के बड़े होने का शक जताया था वो सचमुच बड़ा हो गया था।

उस समय तक यह नहीं पता था कि वो लिम्फ नोड उससे ज्यादा बड़ा था या नहीं जितना इसे होना चाहिए था क्योंकि थैंक्सगिविंग के टर्की की तरह यह कैंसर की कोशिकाओं से भरा हुआ था या फिर यह भयानक और दर्दनाक बायोप्सी की वजह से सूज गया था, जैसा कि मेरे दयालु और सज्जन सर्जन ने बताया था। चाहे जो भी हो, इस लिम्फ नोड का होना बहुत भयानक था, और किसी न किसी को इसे बाहर निकालना ही था।

मुझे बस एक और जांच करवानी थी, जो मेरा बिलीरुबिन का स्तर बढ़ने की वजह से किया जाना था, जिससे मैं क्लीनिकल ट्रायल के लिए अयोग्य घोषित हो सकती थी। मुझे अपने लिवर का अल्ट्रासाउंड करवाने के लिए समय दिया गया, ताकि यह निश्चित किया जा सके कि वहां कोई रूकावट नहीं है।

उस समय तक, मुझे नहीं पता था कि मैं अपने शरीर में एक बार फिर किसी ऐसी चीज का पता लगने के लिए तैयार हूँ या नहीं, जो इसमें नहीं होना चाहिए था। लेकिन अपने अंदर के अंगों के बारे में जानने के लिए एक बार फिर से जांच करवाने के अलावा मेरे पास कोई और विकल्प नहीं था।

* * *

भाग 4 पर जाएँ...

दोनों तरफ से

लेखिका: एलेन वीसबर्ग

विषयसूची
भाग: 1, 2, 3, 4

निष्कर्ष

जब मैं अल्ट्रासाउंड करवाने के लिए कमरे में गयी तब वहां मुझे एक बूढ़ा आदमी मिला, जो अल्ट्रासाउंड तकनीशियन था, उनके साथ काले सूट और टाई में दो और नौजवान लोग थे, जो भले ही दिखने में ब्लूज ब्रदर्स जैसे लग रहे हों, लेकिन तकनीशियन के साथ उनकी बातचीत के आधार पर जहाँ तक मुझे लगता है, वो दोनों उस कंपनी से आये थे जहाँ से अल्ट्रासाउंड उपकरण ख़रीदा गया था।

तीन अनजान आदमी।

और मैं एक अकेली, उन तीन अनजान लोगों के सामने खुद को नंगा महसूस कर रही थी।

जब तकनीशियन ने मेरे लिवर, पित्ताशय और आसपास की जगहों का अल्ट्रासाउंड करने के लिए, मेरी शर्ट ऊपर की और मेरा पैंट नीचे खिंचा तब मैंने उनसे बहुत शालीनता से पूछा कि क्या उन तीनों का कमरे में रहना ज़रूरी है। वो दोनों बहुत अच्छे और सज्जन थे। उनमें से एक कॉफ़ी लेने के लिए कमरे से बाहर चला गया।

मैंने उस तकनीशियन के साथ थोड़ी खिंचा-तानी की, जो लगातार मेरी शर्ट ऊपर करने और मेरी पैंट को थोड़ा नीचे रखने की कोशिश कर रहा था।

उन्होंने बहुत आराम से मुझसे पूछा, "क्या आप अल्ट्रासाउंड नहीं करवाना चाहती हैं?"

मैंने झूठ बोला, "मैं चाहती हूँ," इसके बाद मैंने अपने कपड़ों को छोड़ दिया और अपने हथियार डाल दिए। जब भी वो मेरे किसी हिस्से पर अल्ट्रासाउंड इंस्ट्रूमेंट घुमाते थे मैं अपनी सांस रोक लेती थी और उन्होंने इसे बार-बार आगे-पीछे करना और स्क्रीन पर देखना जारी रखा।

मैंने पूछा, "क्या आपको कुछ दिख रहा है? क्या वहां कुछ है? मेरे लिवर में? पित्ताशय में? अग्न्याशय में?" क्या कोई और ट्यूमर है? क्या एक से ज्यादा ट्यूमर हैं? क्या ट्यूमर के अलावा भी कुछ है? क्या मैं किसी फिल्म की तरह कभी भी किसी एलियन को पैदा करने वाली हूँ?

तकनीशियन ने मुझे लम्बी गहरी सांस लेने के लिए कहा और अपना प्रॉब चलाते हुए स्क्रीन देखता रहा। मुझे ऐसा लग रहा था, मैं घंटों से वहां लेटी हूँ लेकिन, लगभग 20 मिनट के बाद, अल्ट्रासाउंड की जांच पूरी हुई और मैं अपना शरीर वापस ढँक पायी।

इसके बाद एक डॉक्टर मेरे पास आएं और उन्होंने बताया कि मेरा लिवर, अग्नाशय और पित्ताशय ठीक था। इस खबर के बाद ख़ुशी से कूदने के लिए मुझे अपने आपको बहुत रोकना पड़ा, क्योंकि कम से कम मेरे शरीर के तीन अंग ऐसे थे जो खराब या बीमार नहीं थे। मैंने अच्छा काम करने के लिए और इतने दिनों बाद कोई अच्छी खबर देने के लिए तकनीशियन को शुक्रिया कहा। उन्होंने मुझे कहा कि वो मेरे लकी चार्म हो सकते हैं। साथ ही, उन्होंने मुझसे झूठ बोलते हुए कहा कि मैं "बहुत अच्छी मरीज" थी। मुझे पता था मैं बहुत बुरी थी, लेकिन मैं खुश थी कि उन्होंने मुझे ऐसा कहा कि मैं अच्छी थी।

मेडिकल सहायक ने कहा, "आपका ट्यूमर थोड़ा ज्यादा बड़ा है।"

"हम इसे ऐसा बनाने की कोशिश कर रहे हैं कि आपको दोबारा कभी हमसे मिलने की ज़रूरत न पड़े," ऑन्कोलॉजिस्ट ने कहा।

"हम कोशिश कर रहे हैं कि आपको एड्रैमाइसिन या कोई मुश्किल कीमोथेरेपी न लेनी पड़े," ऑन्कोलॉजिस्ट और मेडिकल सहायक दोनों ने कहा।

इसके बाद तय हो गया। मैंने क्लीनिकल ट्रायल के लिए नामांकन करवाने का फैसला किया, जो ऑपरेशन से पहले छह महीने तक हॉर्मोन थेरेपी और पेलबोसिस्लिब के माध्यम से ट्यूमर छोटा करने की कोशिश करेगा, जिससे आसान लम्पेक्टॉमी हो पायेगी और शायद साथ ही ये ऐसी किसी भी चीज को बाहर निकाल देगा, जो उस लिम्फ नोड से मेरे शरीर के दूसरे हिस्सों में गया होगा।

ट्रायल के कुछ हफ्ते पहले मेरी दो बायोप्सी करने की ज़रूरत थी जो मेरे लिए बहुत मुश्किल था, क्योंकि मैं पहले ही अपनी पहली बायोप्सी के गंभीर तनाव से नहीं उभर पायी थी, जिसकी वजह से मैं हफ्तों तक चोटिल और दर्द में रही थी। बायोप्सी अपने आपमें ही मुझे तोड़ने के लिए काफी थी, लेकिन ट्रायल के पक्ष में की गयी बातचीत और इससे मिलने वाले लम्बे समय के फायदों की वजह से मैंने खुद को संभाला और खुद को हिम्मती बनाया।

* * *

जिस कमरे में मेरी दोनों बायोप्सी की जाने वाली थी वहां टेबल पर लेटे हुए, मैंने ये सोचना शुरू किया कि अब तक दोनों अस्पतालों में कितने लोगों ने मुझे बिना शर्ट के देख लिया था। मैं एक ऐसी इंसान थी जो ड्रेसिंग रूम में भी बड़े आईने के सामने कपड़े उतारने में शर्माती थी, ये सोचकर कि उनमें कैमरा लगा हो सकता है। मेरी माँ ने मुझे बताया था कि थोड़े समय बाद तुम इतनी बार कपड़े उतारोगी कि तुम्हें कुछ पता नहीं चलेगा। मैं सोच रही थी वहां तक पहुंचने में अभी मुझे कितना वक्त लगेगा।

पहली बायोप्सी में संदिग्ध दिखने वाले लिम्फ नोड का फाइन-नीडल एस्पिरेशन किया गया, ताकि इसके बड़ा होने का सही कारण पता चल पाए। इस ऑपरेशन के दौरान मुझे पहली बायोप्सी से कम दर्द हुआ, क्योंकि इस बार उन्होंने मुझे पूरी तरह से सुन्न कर दिया था।

इसके बाद हुई अगली और आखिरी बायोप्सी के लिए, मुझे इस हद तक सुन्न कर दिया गया था कि उस समय अगर मेरे स्तनों को हटाकर वहां बॉलिंग बॉल लगा दिया जाता तब भी शायद मुझे कुछ पता नहीं लगता।

लेकिन इन दोनों बायोप्सी वाले दिन जो दर्द मुझे महसूस हुआ वो काफी हद तक भावनात्मक था, क्योंकि जब मैंने अपने पेपर ब्रेसलेट पर टाइप किया गया "MRN" पेशेंट कोड देखा तो मुझे इस बात का एहसास हुआ कि अब मैं उस तरफ नहीं थी जहाँ मैं सालों से रहती आई थी, बल्कि दूसरी तरफ आ गयी थी। मैं हमेशा से जानती थी कि उन अनगिनत "MRN" पेशेंट कोड के पीछे असली लोग छिपे होते थे, जिन्हें मैं ल्यूकेमिया मरीजों से लिए गए खून के हेपरिन-कोटेड ट्यूबों के लेबल पर टाइप किया हुआ देखती थी।

मैं उनके नाम, लिंग और उम्र पढ़ती थी, और अक्सर मेरे दिमाग में उनकी एक तस्वीर बन जाती थी कि वो कैसे दिखते होंगे। लेकिन ऐसा करते हुए मुझे उनसे कोई जुड़ाव महसूस नहीं होता था, क्योंकि विज्ञान पर केंद्रित मेरा दिमाग, अपना काम पूरा कर पाने के लिए, खुद को किसी भी तरह के एहसास की वजह से होने वाले भटकाव से दूर और सुरक्षित रखता था।

अब, मैं खुद एक "MRN" नंबर थी, हेपरिन-कोटेड ट्यूबों के लेबल पर मेरा नाम, उम्र और लिंग टाइप करके, क्लीनिकल ट्रायल के हिस्से के रूप में विश्लेषण करने के लिए संस्थान के कर्मचारियों के पास भेज दिया गया था। मैंने सोचा कि लेबल पढ़ने के बाद अपना काम करते समय उनके विज्ञान पर केंद्रित दिमाग में क्या चलता होगा।

दूसरी बायोप्सी के बाद क्लीनिकल ट्रायल की एक नर्स सैंपल लेने के लिए कमरे में आयी।

"क्या इस बायोप्सी से हमें पता चला कि दवाएं काम कर रही हैं या नहीं?" मैंने उससे पूछा।

"अध्ययन खत्म होने तक हमें ये पता नहीं चलेगा," उसने कहा। उसमें छह महीने बाकी थी। "कुछ मरीज यह जानने के लिए बीच में अल्ट्रासाउंड करवाते हैं कि ट्यूमर के साथ क्या हो रहा है। आप अपनी ऑन्कोलॉजिस्ट से पूछ सकती हैं।"

"हाँ," मैंने कहा, "मैं इसके बारे में सोच रही हूँ।" उसने मुझे बताया कि "अगर एक किसी समय के बाद हमें पता चलता है कि दवाएं काम नहीं कर रही हैं तो हम दूसरी योजना पर जाते हैं।”

उसने हाँ में सिर हिलाया।

मैंने आगे कहा, "मेरी परेशानी यह है कि मेरे शोध का मुख्य फोकस दवा के प्रतिरोध तंत्र को समझना और इसे दूर करने की कोशिश करना है। मेरा काम हमेशा मेरे दिमाग में रहता है, और यह इसे मुश्किल बनाता है। जब तक ये कैंसर मेरे अंदर है, मैं यह जानना चाहती हूँ कि मैं जो दवाएं ले रही हूँ वो इसका सामना कर रहे हैं या नहीं।"

जब मैं बेकाबू होकर अपनी बातें रख रही थी तब एक डॉक्टर कमरे में मेरे साथ थीं और उन्होंने मुझसे कहा कि वो मेरी बात समझ रही है। मैंने कहा, "मैं बहुत सारे सिनर्जी अध्ययन करती हूँ। और मैंने पेलबोसिस्लिब के बारे में बहुत सी अच्छी चीजें पढ़ी हैं, और सैद्धांतिक रूप से मुझे पता है कि मेरे 95% प्रोजेस्टेरोन- और एस्ट्रोजेन-रिसेप्टर पॉजिटिव ट्यूमर को टेमॉक्सीफेन और ल्यूप्रॉन के लिए प्रतिक्रिया करनी चाहिए। मेरे लिए

बस ये अजीब है कि अब मैं प्रकाशन या अनुदान पाने के लिए दवा के संयोजन उपचारों के असर करने की उम्मीद नहीं कर रही, बल्कि ये उम्मीद कर रही हूँ कि ये मेरी ज़िन्दगी के लिए काम कर जाएँ।"

उस डॉक्टर ने मुझे सहानुभूति भरी नज़रों से देखा। जबसे मैंने अपनी राय देनी शुरू की थी तबसे उन्होंने मुझे कई बार इन नज़रों से देखा था। मैं घर पर अपनी मेज पर बैठी हुई थी कि तभी मुझे मेडिकल सहायक का कॉल आया, जिन्होंने सबसे पहले मुझे उस एंटी-ल्यूकेमिया दवा को एफडीए की स्वीकृति मिलने के लिए बधाई दी, जिसका मैंने ड्रग स्क्रीन में पता लगाया था। हालाँकि, जो ख़ुशी उन्होंने मुझे दी थी, लगभग तीस सेकंड बाद चकनाचूर हो गयी, जब उन्होंने मुझे ये बात बताई कि फाइन नीडल बायोप्सी से यह साबित हो गया है कि मेरे एक बड़े सेंटिनल लिम्फ नोड में कैंसर है।

भले ही मुझे इसका शक था, फिर भी मैं सुन्न महसूस कर रही थी।

* * *

हैरानी की बात यह है कि एक खतरनाक गाँठ और कैंसर से भरी कम से कम एक लिम्फ नोड के होते हुए, हर दिन गोलियां खाते और हर महीने इंजेक्शन लगवाते हुए, ज़िन्दगी के छह महीने कब गुजर गए पता ही नहीं चला। हॉर्मोन थेरेपी की वजह से मेरा मेनोपॉज़ जल्दी हो गया, और अक्सर दिन में कई बार मैं कभी आर्कटिक टुंड्रा और कभी सॉना में होने के एहसास के बीच झूलती रहती थी। पेलबोसिस्लिब कभी-कभी मेरी श्वेत रक्त कणिकाएं कम कर देता था, और मुझे समय से पहले ही इसे लेना बंद करना था ताकि दोबारा उपचार शुरू होने से पहले इनकी संख्या वापस ठीक हो सके।

मैं अक्सर अपनी गाँठ को छूती रहती थी और आमतौर पर मुझे कोई बदलाव महसूस नहीं होता था जब तक कि उपचार के कई महीने बीत नहीं गयी। मुझे उस समय बहुत ख़ुशी, और हैरानी हुई और मैंने राहत की सांस ली, जब मुझे उसी गाँठ को अपने अंदर खोजने के लिए थोड़ी मेहनत करनी पड़ी, जो उस भयानक शाम इतनी बड़ी थी कि मैं बेचैनी से पागल हो गयी थी, जब अपने बिस्तर पर टीवी देखते हुए पहली बार मैंने इसे महसूस किया था।

कई मेडिकल कर्मचारियों ने अपने अनुमान से गाँठ की माप ली और छह महीने पहले ली गयी असली माप से इसकी तुलना की। ऐसा माना गया कि ट्यूमर अपने असली आकार के लगभग 1/8 तक सिकुड़ गया था, और बड़ी लिम्फ नोड का आकार भी कम हो गया था।

"यह क्लीनिकल ट्रायल के लिए अच्छा शकुन है।" मैंने उत्साहित होकर क्लीनिकल ट्रायल की एक नर्स से कहा, उस समय मैं अपनी आवाज़ की थरथराहट को नहीं छिपा पा रही थी।

"यह आपकी ज़िन्दगी के लिए अच्छा शकुन है," उसने सीधे लहजे में कहा, और क्षण भर में मुझे अपने अजीब शोधकर्ता मोड से बाहर निकाल दिया। उस समय, मैं अपनी ज़िन्दगी के ऊपर विज्ञान की प्रगति को कैसे प्राथमिकता दे पायी, मुझे नहीं पता। लेकिन मैंने ये किया था।

जैसे ही मुझे लगा कि सभी परेशान करने वाले मूल्यांकन, मापन और ग्रेडिंग अब खत्म हो चुके हैं, तभी मेडिकल सहायक ने मुझे बताया कि उन्हें "ऑन्कोटाइप DX" करना होगा, जो एक स्कोर बताने के लिए 21 ब्रेस्ट कैंसर के जींस के स्तरों को मापता है, जिससे उन्हें मेरे कैंसर के आक्रामक होने या वापस आने के

जोखिम का पता चलता। कम स्कोर का मतलब था कैंसर का जोखिम कम था, और ज्यादा स्कोर का मतलब था कैंसर का जोखिम ज्यादा था, और "रेड डेविल" या एड्रियामाइसिन (डॉक्सोरूबिसिन) जैसे मानक कीमोथेरेपी के उपचार से मिलने वाले फायदे दवा के बुरे दुष्प्रभावों से ज्यादा थे।

मेडिकल सहायक ने मुझे कॉल किया। एक पल के लिए फोन उठाने में मुझे हिचकिचाहट हुई और मैंने खुद को तैयार किया, क्योंकि मेरे दिमाग में हमारी पिछली फोन कॉल की बातचीत चल रही थी, जब उन्होंने मुझे लिम्फ नोड पॉजिटिव होने के बारे में बताया था। उन्होंने मुझे फ़ौरन बताया कि ऑन्कोटाइप स्कोर आ गया था और ये "9" था, जो कि कम था। इससे जाहिर हो गया कि मुझे कीमोथेरेपी से कोई फायदा नहीं होता। मुझे सर्जरी, उसके बाद रेडिएशन, उसके बाद कई सालों तक हॉर्मोन थेरेपी और साल में दो बार हड्डी-मजबूत करने की दवा का इंट्रावेनस इन्फ्यूज़न करवाने की ज़रूरत पड़ने वाली थी जो मेटास्टैसिस भी रोकता है।

बाकी सभी दिनों को छोड़कर, सर्जरी का दिन मेरे जन्मदिन वाले दिन तय हुआ, जिसे मैंने मेडिकल कर्मचारियों से भी छिपाने की कोशिश नहीं की। प्री-सर्जरी रूम से लेकर अस्पताल के बाहर पिक अप करने के लिए व्हीलचेयर पर बैठाकर ले जाते समय तक, मैंने ख़ुशी-ख़ुशी उन सभी पार्टियों में हिस्सा लिया जो मुझे सहानुभूति दिखाने के लिए रखी गयी थीं।

एनेस्थीसिया की वजह से मुझे बस इतना याद है कि एक पल मुझे स्ट्रेचर पर लेटाकर सर्जरी रूम में ले जाया जा रहा था, और दूसरे ही पल उठने के बाद, मैं एक नर्स से बिना किसी सुधबुध के न जाने क्या बड़बड़ा रही थी, जो बड़े आराम से मेरी बोली गयी हर एक चीज को नज़रअंदाज़ कर रही थी। मुझे यह एहसास था कि उसे ऐसी चीजों की आदत थी।

वो सेंटिनल लिम्फ नोड जिसे पहले कैंसर के लिए पॉजिटिव पाया गया था, सर्जरी से हटाने के बाद उसकी दोबारा जांच की गयी। जब मेडिकल सहायक ने मुझे यह बताने के लिए कॉल किया कि निकाले गए लिम्फ नोड में कैंसर का अवशेष था या नहीं, जिस तरह से उन्होंने पहले मुझे अच्छी और बुरी खबरें दोनों दी थीं, मुझे यह अंदाज़ा हो गया था कि ये कुछ भी हो सकता है।

आखिरकार, फैसला मेरे हक़ में नहीं हुआ। सहायक लिम्फ नोड्स निकालने के लिए मुझे दूसरी सर्जरी करवाने के लिए बोला गया, जिसकी यह पता लगाने के लिए इसी तरह जांच की जाती कि कैंसर मौजूद है या नहीं। पॉजिटिव होने पर, मुझे बताया गया था कि योजना बदल दी जाती और मुझे कीमोथेरेपी के लिए भेज दिया जाता। नेगेटिव होने पर, मैं ख़ुशी से झूम सकती थी, लेकिन ऐसा कर पाने के लिए सही से ठीक होने के बाद।

* * *

अगली सर्जरी लगभग दो हफ्ते बाद थी। मैंने पाया कि मैं एक बार फिर से एनेस्थीसिया में खुद को डुबाने का इंतज़ार कर रही थी, सर्जरी से पहले और बाद के बीच की चीजों की कोई याद न रखने का अनुभव करना चाहती थी और रिकवर होते समय अपने पास मौजूद किसी भी इंसान के सामने होश में आकर बड़बड़ाना चाहती थी।

लेकिन इस बार, सर्जरी से मुझे उससे ज्यादा दर्द महसूस हुआ जितना कि लम्पेक्टॉमी के बाद हुआ था, और कुछ हफ्तों तक मैं अपने घर में वॉशर के नीचे मौजूद गीले कपड़े उठाने के लिए भी नहीं झुक पाती थी, क्योंकि ऐसा करते समय मुझे ऐसा लगता था मानो कोई मेरे कंधे में तेज चाकू मार रहा हो।

मेडिकल सहायक ने मुझे कॉल किया। जो मेरे हिसाब से "मेरी ज़िन्दगी बदलने वाली खबर" देने का तरीका बन गया था और मैंने अपनी सांस रोककर उस कुर्सी के हत्थे को जोर से पकड़ जिसपर मैं बैठी हुई थी।

उन्होंने कहा, "आपकी सहायक लिम्फ नोड्स का परिणाम आ गया है, और ये नेगेटिव है।"

उस समय, मैंने इतनी जोर से राहत की सांस ली कि मुझे लगता है एक पल के लिए हमारा घर पूरा हिल गया होगा। जिन शक्तियों ने मुझे पकड़ रखा था, आखिरकार उन्होंने अपनी पकड़ ढीली की और अब मैं फिनिश लाइन तक पहुंच सकती थी। अब बस मुझे छह हफ्ते की रेडिएशन थेरेपी का इंतज़ार था, जो उपचार वाली जगहों पर निशान लगाने के लिए छोटी झाई जैसे टैटू के साथ सीने में छेद करने के साथ शुरू हुआ।

कुछ हफ्तों बाद हर रोज दो गाउन उतारते और दोबारा पहनते हुए, एक घूमती हुई मशीन के सामने टेबल पर लेटना एक तरह से दिनचर्या बन गया। मेरे पता चलने से पहले ही, आखिरी दिन आ गया, और मैंने अपनी पहनी हुई गाउनों को उतारकर आखिरी बार अस्पताल के ड्रेसिंग रूम के बाहर लांड्री बिन में फेंक दिया।

कुछ महीने बाद मेरी मैमोग्राफी की गयी। "कोई चिंता की बात नहीं है" और "हानिरहित ऊतक" जैसे शब्द मुझे दोबारा उन आसान दिनों में ले गए, जब ऐसी रिपोर्ट सामान्य हुआ करती थी, और जिन्हें मैं कोई अहमियत नहीं देती थी।

अपने घर के कंप्यूटर पर डेटा कैलकुलेट करते और ग्राफ बनाते हुए गर्म कॉफ़ी पीने और अनुदान की अगली डेडलाइन के लिए प्रस्ताव को मजबूत बनाने की कोशिश करते हुए, देर रात तक काम करने के साथ, काफी हद तक ज़िन्दगी वापस उसी पटरी पर आ गयी है, जैसी यह कैंसर का पता चलने से पहले थी। कभी-कभी मैं रात में टेमॉक्सीफेन लेना भूल जाती हूँ लेकिन, ज्यादातर, ब्रश करने और मुंह धोने की तरह ये भी एक आदत बन गया है। मैं इसे क्यों ले रही हूँ उसके कारणों के बारे में बहुत ज्यादा सोचे बिना मैं बस इसे खा लेती हूँ।

ल्यूप्रॉन- या टेमॉक्सीफेन की वजह से अपने बढ़े हुए वजन पर मुझे ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है और मैं बिल्कुल कम चीनी और बहुत सारे प्रोटीन वाला ज्यादा पौष्टिक आहार लेती हूँ। और कभी-कभी मुझे ज्यादा थकान महसूस होने लगती है और मुझे नहीं पता ऐसा क्यों होता है। हर कुछ महीने पर ऑन्कोलॉजिस्ट और मेडिकल सहायक के ऑफिस जाना मुझे यह याद दिलाता रहता है कि मुझे क्या हुआ था, और जिसकी मुझे दोबारा होने की हमेशा चिंता रहेगी।

और फिर MRN नंबर, मरीज के नाम, उम्र, लिंग भी हैं जिन्हें मैं हमेशा अपनी लैब की नोटबुक में रिकॉर्ड करती हूँ, अस्थि मज्जा के सैंपल हैं जिनका मैं फिकॉल शुद्धिकरण करती हूँ और कोशिकाएं जिन्हें मैं हेमोसाइटोमीटर पर गिनती हूँ और जिनसे मैं नए टार्गेटेड ल्यूकेमिया की दवाओं की सक्रियता का परीक्षण करती हूँ। मैं दोबारा कभी MRI नंबरों को पहले की तरह नहीं देख पाऊँगी।

मुझे याद है जब एक तकनीशियन ने मेरे रेडिएशन अपॉइंटमेंट के आखिरी दिन मुझसे ये कहा था कि "आपको ब्रेस्ट कैंसर की मरीज के रूप में अपने अनुभवों के बारे में लिखना चाहिए। मेरा मतलब है, आप औरतें कितना कुछ झेलती हैं।"

मैंने हाँ में सिर हिलाया। "हाँ, शायद मुझे इसके बारे में लिखना चाहिए।"

मैं मानती हूँ कि मेरा ये सफर लिखने के लायक था, और एक तरीके से, मेरा मानना है कि इस सफर ने मुझे ज़िन्दगी में एक बेहतर जगह पर पहुंचा दिया है। एक ऐसी जगह जहाँ मैं उसकी बहुत सराहना करती हूँ जो मैं थी, जो मैं हूँ, और जो मैं अभी भी बन सकती हूँ।

कॉपीराइट © 2019 एलेन वीसबर्ग द्वारा

ऊपर जाएँ

क्या आप लेखिका की तारीफ करना चाहते हैं?
क्या आप कोई टिप्पणी या सुझाव देना चाहते हैं?
कृपया हमें मैसेज करें और हमें इसे उन तक पहुंचाकर ख़ुशी होगी।

पाठकों का मार्गदर्शक पर वापस जाएँ
अंक सूची पर वापस जाएँ